लोक संगीत लोकनश्त्य और षास्त्रीय संगीत

19

डा० अनीता कश्यप*

सारांश

संगीत में लोक संगीत विशेश स्थान रखता है। संस्कषति का सुखद सन्देश ले जाने वाली कला लोक संगीत है। लोक संगीत स्थान विशेश की सभ्यता और संस्कषति की पहचान है। मानव और तत्कालीन जीवन की सारी विशेशताओं का समावेश होता है। भारतीय लोक संगीत के साथ–साथ लोक नष्त्यों को भुलाया नही जा सकता। लोक नष्त्य, लोक संगीत का महत्वपूर्ण अंग है। मनोवैज्ञानिक आधार पर मनुश्य में भाव प्रदर्शन की इच्छा प्रारम्भ से ही रही है।

जिन्होंने आगे चलकर नष्त्य का रूप ले लिया। लोक संगीत जब समषद्धि की परिकाश्ठा पर पहुँच जाता है। तब उसमें से कुछ सामान्य सिद्धान्तों का चलन करके उस संगीत के शास्त्र निर्माण किया जाता है और तब लोक संगीत ही शास्त्र की अगुँली पकड़ कर शास्त्रीय संगीत कहलाने लगता है।

मूल शब्द

1. अराधना
2. आत्मा नुभूति
3. रसानुभूति
4. भौतिक
5. भावाभिव्यक्ति

जिस संगीत को लोक ने लोक के लिये बनाया है अर्थात् जिसमें आदि मानव की अभिव्यक्तियों बिना किसी बाहरी सजावट के मिलती है, जिनमें प्राचीन संस्कषति के अवशेश विद्यमान होते है, उसे हम लोक संगीत की संज्ञा प्रदान कर सकते है, जबकि शास्त्रीय संगीत स्वर, ताल, लय आदि नियमों से आबद्ध होकर वैज्ञानिक रीति से परिवेश होता है। जिस[1] प्रकार साहित्य में व्याकरण का विशेश महत्व होता है। शास्त्रीय संगीत में इन नियमों का भी वही महत्व है।

संगीत में लोक संगीत विशेश स्थान रखता है। भारतीय जीवन की तो इसके बिना कल्पना ही नही की जा सकती, क्योंकि इसमें प्रेम, भक्ति, अनुराग तथा धर्म आदि मानव जीवन के समस्त अवयवों का समावेश है। रवीन्द्र नाथ टैगोर कहते है –''संस्कषति का सुखद सन्देश ले जाने वाली कला लोक संगीत है।''

लोक संगीत का निर्माता कोई नही होता। यह स्वतः ही निर्मित होता है, कोई काल या कोई शास्त्र इसका निर्माता नही होता, यह किसी जन विशेश के लिये भी नही होता। कब

*एसोसिएट प्रोफेसर, रघुनाथ गर्ल्स कालेज मेरठ

कहाँ और कैसे इसका निर्माण होता है, किसी को इसका ज्ञान नही होता। लोक संगीत ग्राम्य जीवन का द्योतक है। विशेश रूप से लोक संगीत उस जगह की सभ्यता और संस्कृति की सही पहचान है इसमें मानव अपने को पूरा उतार देता है। स्वच्छन्द भावना और स्वच्छन्द अभिव्यक्ति ही इसका आधार है। इसलिये लोक संगीत में मानव और तत्कालीन जीवन की सारी विविध ाताओं का समावेश होता है।

पं0 लालमणि मिश्र ने लोक संगीत को प्राकषतिक संगीत बताया है। जो कि स्वयं विकसित हुआ है। यही नही अन्य विद्वानों ने भी लोक संगीत उसी को माना है, जिसका निर्माण स्वयं ही होता है।

लोक संगीत लोक साहित्य का ऐसा पक्ष है, जो मानव द्वारा निर्मित सरल, सुन्दर, रसपूर्ण ह्रदय में शीघ्र प्रवेश पाने वाले तथा सुन्दर भावों को छिपाया होता है। इसलिये वह मानव के अधिक निकट होता है। इसमें कोई अवधि नहीं, आयु नहीं, कहाँ से आता है, कहाँ जाता है – कोई नहीं कह सका। ''अगर भारतीय लोक संगीत के सम्बन्ध में पूर्ण खोज की जाये, तो ऐसी बहुत सी बातें मालूम होगी, जो हमें मालूम नही है। संगीत का सम्बन्ध संस्कृति से है और संस्कृति देश का दर्पण है। अतः ढूढने पर हमारी प्राचीन सभ्यता आदि का बहुत कुछ प्रभाव लोक संगीत में मिल सकता है।'' लोक संगीत हमारी संस्कृति के दर्पण है लोक गीत एक पीढ़ी से दूसरी को प्राप्त होते रहे है। अतः इसकी एक परम्परा और इतिहास है। जिसमें लोक जीवन की झौकी मिलती है।

भारतीय लोक संगीत के साथ–साथ लोक नष्त्यों कौ भुलाया नही जा सकता। लोक नष्त्य लोक संगीत का एक महत्वपूर्ण अंग है। मनोवैज्ञानिक आधार पर मनुश्य में भाव प्रदर्शन की इच्छा प्रारम्भ से ही रही है। प्रारम्भ में मानव[3] ने अपने भावों को व्यक्त करने के लिये कुछ ऐसे हाव भावों का प्रदर्शन [4]किया, जिन्होंने आगे चलकर नष्त्य का रूप ले लिया।

मनुश्य जब अति प्रसन्न होता है, तो वह खुशी से नाचने लगता है। शादी, जन्म आदि अवसरों पर लोग प्रसन्नता को नृत्य के माध्यम से प्रदर्शित करते है। मन्दिर में भक्त भगवान की अराधना करते–करते खुशी से झूमने लगता है। कोई भी शुभ कार्य नृत्य के बिना सम्पन्न नही होता, इसलिए लोक जीवन की प्रत्येक दिशा नृत्य से परिपूर्ण है।

यह नष्त्य मानव जीवन के अधिक निकट होते है। ये ही संस्कषति के मूल है, जिनके माध्यम से हम कला को अत्यन्त निकटता से देख सकते है। श्री शान्ति लाल अवस्थी का विचार है–''लोक नष्त्य जीवन का आत्मानुभूति है और उसकी पहुँच मनुश्य की आत्मा तक है।''

भारतीय संगीत का शास्त्रीय पक्ष इतना परिपक्व तथा स्थूल है, जितना शायद ही अन्य किसी स्थान या देश का हो। संगीत के तीनों भेद गायन, वादन एवं नृत्य तब ही शास्त्रीय माने जाते है, जब ये तीनों प्राचीन शास्त्रीय नियमों से बद्ध हो। इन नियमों का पालन करना आवश्यक और अनिवार्य है। शास्त्रीय संगीत नाम से ही ऐसा महसूस होता है कि इसमें कुछ नियमों का समावेश होगा और अपनी इसी विशेशता के कारण प्रत्येक मनुश्य के लिये मनोरंजन

का साधन नही बन पाता। जगदीश नारायण पाठक का कथन है – ''लोक संगीत जब समृद्धि की पराकाश्ठा पर पहुँच जाता है, तब उसमें से कुछ सामान्य सिद्धान्तों का चलन करके उस संगीत के शास्त्र का निर्माण किया जाता है और तब लोक संगीत ही शास्त्र की अंगुली पकड़ कर शास्त्रीय संगीत कहलाने लगता है।''

इन्द्राणी चक्रवती के अनुसार – ''जो संगीत परम्परानुगत तथा शास्त्रबद्ध हो, वह शास्त्रीय संगीत कहलाता है। यह आवश्यक नहीं कि शास्त्रीय संगीत में कोई परिवर्तन न हो, क्योंकि आज का लोक, कल नियमबद्ध होने से शास्त्र बन सकता है अथवा आज का शास्त्र प्रयोग में रहने के कारण कल का लोक बन सकता है।'' ''शास्त्र का निर्माण संगीत की परिश्कृत और समृद्ध रूप में बनाये रखने तथा उसे स्थायीत्व प्रदान करने के लिये किया जाता है। अर्थात् शास्त्रीय संगीत में लोक संगीत का जनमन रंजन का भाव तो निश्चित रूप से होता ही है, किन्तु उसकी स्वच्छन्दता में कुछ बाह्य प्रतिबन्ध लगा दिये जाते है जो मूलतः संगीत की रक्षा का विधान करते है। अन्त में हम कह सकते है कि शास्त्रीय संगीत का अपना श[5]स्त्र है। अपने नियम है, अपनी परम्परा है। उसका शास्त्रीय पक्ष व्यक्ति निश्ठ होते हुये भी समाज का सौन्दर्य रंजन एवं रसानुभूति देता है।''

संगीत एक ऐसी ललित कला है। जिसमें एक असीम सुख समाहित रहता है और जिसको प्राप्त करने के लिये प्रत्येक प्राणी लालायित रहता है। मानव जीवन का प्रत्येक पहलू संगीत से प्रभावित होता है। मानव जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नही[6], जो संगीत से शून्य हो।

मनुश्य जन्म के साथ–साथ मष्त्यु प्रर्यन्त संगीत जीवन में समाहित रहता है। जब बालक का जन्म होता है तब शुभकामनाओं से परिपूर्ण गीत गाये जाते है। उसके थोड़ा बड़ा होने पर भारतीय समाज में अनेक प्रकार के संस्कारों की प्रथा होती है। उनमें भी संगीत पूर्ण रूप से समाहित रहता है। युवावस्था में विवाह पर संगीत आयोजन होते है। मष्त्यु उपरान्त भी अनेक स्थानों में संगीत द्वारा भावाभिव्यक्ति की जाती है। पंजाब में मष्त्यु के अवसर पर ''वैण'' को गाये जाने के उल्लेख मिलते है।

भारतीय जीवन में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है। धर्म संगीत से पूर्ण रूप से प्रभावित होता है। आदिकाल से ही समाज में धार्मिक प्रतिश्ठानों में गीत, संगीत का विशेश रूप से आयोजन किया जाता है। वैदिक युग का साम संगीत इसका सुन्दर उदाहरण है। संगीत में भक्ति संगीत का अपना एक अलग ही महत्व होता है। वैदिक काल से आज तक विविध रूप में इस विशय पर विचार किया गया। साहित्य के क्षेत्र में भक्ति को विशेश रूप से माना गया है। जब भक्ति संगीत के माध्यम से भावाभिव्यक्ति करती है तो भक्त के व्यक्तित्व का विलयन भगवान में होने लगता है तबवह अपने समस्त दुःखों को भुलाकर एक अपूर्व आनन्द की अनुभूति करता है।

जिस संगीत की उत्पत्ति ही ईश्वर के द्वारा हुई हो, तो वह ईश्वर तक पहुँचने का सुन्दर मार्ग भी अवश्य होगा। फिर यह संगीत ईश्वर से अलग कैसे हो सकता है। इसलिये भारतीय विद्धानों ने संगीत को हृदय की अनुभूतियों का सफल साधन मानते हुये धर्म, अर्थ,

काम, मोक्ष आदि की प्राप्ति के लिये पूर्ण रूप से सक्षम माना है। भारतीय दार्शनिकों ने कला और मुक्ति का गहन सम्बन्ध बताया है। जो कला केवल भौतिक सुखों को देने वाली हो। वह कला, कला नही है। डॉ0 लाल मणि मिश्र के अनुसार– ''कला का अंतिम उद्देश्य भौतिक संसार से उठकर ऐसी मधुमति अवस्था को प्राप्त करना है, जिसमें भौतिक द्वन्दों सत्ता ही विनश्ट हो जाय।''

धर्म मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। संगीत से जुड़ा हुआ है। धर्म और संगीत दोनों मिलकर मानव को आत्मानन्द की प्राप्ति कराने के सक्षम में होते है।

संगीत मानव जीवन में इतनी गहराई से प्रविश्ट है कि मानव जीवन का प्रत्येक क्षेत्र चाहे वो धार्मिक हो, सामाजिक हो, अथवा व्यक्तिगत अथवा सार्वजनिक – अपना एक विशिश्ट स्थान बनाये हुये है।

मानव अपने अकेले पन को दूर करने के लिये मस्तिश्क की थकावट को दूर करने के लिये संगीत का सहारा लेता है। श्रमिकों का काम करते हुये गाना, पनघट की ग्रामीण युवतियों के गीत, कपड़े धोते समय धोबियों के गीत इत्यादि इस बात का प्रमाण है कि मानव जीवन संगीत पर आश्रित है। संगीत प्रत्येक व्यक्ति के रग–रग में बसा है।

लोक संगीत के माध्यम से भी संगीत ने मानव जीवन में प्रवेश किया है। भारत तो लोक संगीत प्रधान देश है। उसके अन्तर्गत विवाह पर गाये जाने वाले गीत, अनेक संस्कारों पर गाये जाने वाले गीत, सावन के गीत, इत्यादि सम्मलित किये जा सकते है। इन अवसरों पर मानव संगीत द्वारा अपना मनोरंजन करता है।

शास्त्रीय संगीत के रूप में भी संगीत को मानव जीवन के अत्याधिक निकट पाते है। वैदिक काल में शास्त्रीय संगीत सर्वाधिक उन्नत अवस्था में देखने को मिलता है। यद्यपि मध्यकाल में शास्त्रीय संगीत की पर्याप्त उन्नति हुई। आधुनिक काल में इसकी प्रगति के लिये प्रयास किये गये, परन्तु वह उस स्थिति में नही आ पाया, जो वैदिक काल में था फिर भी हमारा शास्त्रीय संगीत, भारतीय संस्कृति में मानव जीवन में अपना एक विशेश स्थान रखता है।

संगीत का चाहे कोई भी प्रकार क्यों न हो चाहे वो शास्त्रीय संगीत हो, या लोक संगीत, भक्ति संगीत हो या सुगम संगीत, सबका इसमें समावेश है। संगीत अपनी चंचलता से ओतप्रोत होने के कारण हृदय पर अत्यन्त शीघ्र ही प्रभाव स्थापित कर लेता है।

आदि काल से अब तक अनेक महान पुरूश संगीत के महत्व को स्वीकार करते आ रहे है। इसलिए प्राचीन काल से अब तक समय समय पर महान संगीतज्ञों और कवियों ने अपना सन्देश भक्ति संगीत के माध्यम से जन–साधारण तक पहुँचाया। सूर, तुलसी, कबीर के पद घर–घर में गाये जाते है, उन्होंने काव्य में' संगीत समाहित कर संगीत को जन–साधारण तक पहुँचाया है। इस प्रकार आदि काल से अब तक अनेक विद्वान संगीत के महत्व को स्वीकार करते आ रहे है।

मानव हृदय को क्रेन्द्रीभूत करने में भी संगीत सहायक है, इससे मानव–हृदय की समस्त चंचल वषतियाँ क्रेन्द्रीभूत होकर अन्तर्मुख हो जाती है। संगीत पाशाण हृदय को भी

द्रवित कर देता है तथा प्रत्येक मनुश्यों में प्रेम का संचार करता है। संगीत एक ऐसी कला है, जिसमें साध्य और साधन दोनों पक्षों का समावेश है। अन्य कलाओं में हमें यह विशेशता देखने को नहीं मिलती।

संगीत के महत्व को दर्शाते हुये अनेक विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये है।

''संगीत एक ओर मानवीय जीवन की चिन्ताओं का निराकरण करता है तो दूसरी ओर मानव जीवन को सरस बनाता है।''

डॉ0 लालमणि मिश्र की मान्यता है ''संगीत जीवन के ताने–बाने का वह धागा है जिसके बिना जीवन सत् और चित् का अंश होकर भी आनन्द रहित रहता है तथा नीरस प्रतीत होता है।

संगीत से आत्मतुश्टि तो मिलती ही है, साथ ही पारलौकिक सन्तुश्टि भी प्राप्त होती है। संगीत बहु–आयामी शब्द है। मानव जीवन का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। संगीत मानव जीवन से जुड़ा हुआ है। अतः इसका क्षेत्र भी व्यापक होना स्वाभाविक है। यह मानव की सूक्ष्म अर्न्तवृत्तियों के उद्घाटन का सबल साधन है।

संदर्भ

1. काव्य और संगीत का पारस्परिक सम्बन्ध, पृ0 9
2. संगीत शास्त्र पराग गोविन्द राव राजुरकर पृ0 29
3. ध्वनि और कम्पन अरविन्द मोहन पृ0 96
4. लेक संगीत अंक – मुख्य पृ0 1 जनवरी 1966
5. भारतीय संगीत वाद्य, डा0 लाल मणि मिश्र, पृ0 76
6. वही पृ0 97
7. भारतीय संगीत वाद्य – डॉ0 लाल मणि मिश्र, पृ0 76
8. सम्मेलन पत्रिका लोक संस्कषति अंक लोक नष्त्यों और लोक वाद्यों में लोक जीवन की व्याख्या, पृ0 380
9. निबन्ध संगीत सं0 लक्ष्मी नारायण गर्ग – शास्त्रीय संगीत और फिल्म संगीत पृ0 113
10. संगीत मंजूशा – पृ0 19
11. संगीत शास्त्र पराग गोविन्द राव राजकुमार शास्त्रीय संगीत, पृ0 25
12. भारतीय संगीत वाद्य – डॉ0 लाल मणि मिश्र, पृ0 ।
13. जहाँ एक ओर जीवन की जटिल समस्याएँ मनुश्य को चिन्तित करती है वहाँ दूसरी ओर संगीत मनुश्य की सारी चिन्ताओं का निराकरण करता है। संगीत निबन्ध माला : पं0 जगदीश नारायण पाठक पृ0 131
14. भारतीय संगीत वाद्य – डा0 लालमणि मिश्र पृ0 ।